167 P
651
M

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1258/7074

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 651

891.431
P887R

* बन्देमातरम् *

राष्ट्रीय गान माला

लेखक—

ड्रामेटिस्ट-गौरीशंकर प्रसाद "शायक"

साहित्यालङ्कार, काशी ।

प्रकाशक—

मथुराप्रसाद, ।

पंचानन प्रेस, बनारस सिटी ।

पं० द्वीदयाल बाजपेयी द्वारा-

पंचानन प्रेस, काशी में मुद्रित ।

RECEIVED
30 MAR. 1921

❀ बन्देमातरम् ❀

कलामे--"शायक" ।

उठायेंगे जब वो तबर देख लेना ।
तो लाखों उड़ायेंगे सर देख लेना ॥
चलायेंगे जब के वो तीरे सितम को।
तो हम होंगे सीना सिपर देख लेना ॥
जो कल खुश्क शाखें तमन्ना थी अपनी ।
उगायेंगे उसमें समर देख लेना ॥
फलक के भी दिल में चुभेगा ये जाकर ।
जो उठता है दर्दे जिगर देख लेना ॥
हिला देंगे पायः ज़मीं आसमां के ।
करेंगे जो दिल से कहर देख लेना ।
जो भारत कि वेदी पै सर दे चुके हैं ।
वो होंगे जहां में अमर देख लेना ॥
खुलेंगी ज़ुबानें जो अहले दहां से ।
तो आहों में क्या है असर देख लेना ॥
जो "गांधी" वो "तैयब" हैं नेता हमारे ॥
वही होंगे शमशोकमर देख लेना ॥
जहांमें जो रोशन हैं "शायक" के हासिद ।
वो होंगे चिराग़े सहर देख लेना ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 651
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

गाना—२

कुछ मेरे गांधी के दिलपर हो रहा इलहाम है।
इसलिये स्वाधीनता का छिड़ गया संग्राम है॥
सुर्ख़रू हम होंगे उनकी ख़ंजरे फौलाद से।
क्योंकि यक आया मुझे मिर्रीख़ का पैग़ाम है॥
वाहरे शौक़ेसहादत वाहरे जोशे जुनूं।
सर बकफ वालों कि हिम्मतका ग़ज़ब अंजाम है।
क्या अजब मौक़ा है रन में बेगुनाहों के लिये।
मरने में बैकुण्ठ है जीतें तो फिर आराम है॥
उनकि मक़तलमें जो हैं तोपें चुनी तो डर है क्या।
वार सहने को मेरी इन हड्डियों का चाम है॥
बुज़दिली का हिन्द से है मिट रहा नामोनिशां।
शेरे दिल हम हैं न अपना अब ख़यालेख़ाम है॥
जब के हम आज़ाद होंगे चैन पायेंगे तभी।
या कफन को ओढ़ कर सोने ही में आराम है॥
राहे मक़तल से गुज़र कर जायँगे जन्नत में जो।
उनके ख़ातिर आबे कौसरका छलकता जाम है॥
अब मेरी आहों कि ताक़त तुम भी "शायक़" देखना।
होने वाला बज़्म से तिश्ने दहन नाकाम है।

———

गाना-३

भाईयों बेशक तुम्हें आज़ाद होना चाहिये ।
मिल रहा मौका है जो इसको न खोना चाहिये ॥
टूट कर माले से हैं जो मोतीयाँ बिखरी हुईं ।
संगठन के सूत में बिलकुल पिरोन चाहिये ॥
कर अहिंसा वृत का पालन मरके इस संग्राम में ।
गोद में भारत के सुखकी नींद सोना चाहिये ॥
क्या अजब उत्साह है इस दम नमक के वास्ते ।
जो भी मिलता है वही कहता है नोना चाहिये ॥
कहेती है दूल्हन कि सूरत में कज़ा आई हुई ।
के कफन को ओढ़ कर हम तुमको सोना चाहिये ॥
कह रहा हैं आसमां स्वाधीन होने के लिये ।
खू के फब्वारों से हर गलियों को धोना चाहिये ॥
चल रहा "शायक" जो उनका अब दमन का चक्र है ।
तो उसे भी शौक से रख सिर पै ढोना चाहिये ॥

—※—※—

गाना—४

सितमगर के हरसू रिसाले पड़े है ।
गरीबों को जीने के लाले पड़े है ॥
करें उनसे फरियाद मकतल में कैसे ।
जुबां में अजल से ही ताले पड़े हैं ॥
हैं आज़ादे किस्मत वो लन्दन के गोरे ।
औ बन्धन में भारत के काले पड़े है ॥
भलातय करें अपने मंज़िल को कैसे ।
गुलामी की ज़ंजीर डाले पड़े है ॥
उठा है धुवां जो के आंहो से मेरे ।
फलक के भी आंखों में ज़ाले पड़े है ॥
जो बहते हैं आखों से आंसू हमारे ।
ये मोती के माले उबाले पड़े हैं ॥
दिखायेंगे दावर को महेशर में अपना ।
ये आहों से दिल में जो छाले पड़े हैं ॥
बहादर हैं लड़ते अहिंसा के रन मे ।
औ बुज़ दिल जो हैं वो निराले पड़े हैं ॥
खुदा ही करे खैर "शायक" जहां में ।
के जब के सीतमगर के पाले पड़े ॥

———

गाना—५

सब कुछ खोकर भारतबासी बेचारे बन गये।
पर उनके घर तो कुबेर के भण्डारे बन गये॥
ज़ालिमने किस हिकमतसे हर काशानेंको लूटा।
जिस्से कितने मुफलिस होकर आवारे बन गये॥
तीरे सितम ने दिल में वो नख़्चीरें कर दिया।
ख़ूने जिगर से सैकड़ों फौव्वारे बन गये॥
आपस कि कलह फूट ने रुतबा ही खो दिया॥
हम चाँद थे बनने वाले पर सितारे बन गये॥
जिन बुतोंको मनमन्दिर में था स्थापित कर रखा।
बस वही जलाने को मुझको अंगारे बन गये॥
सुख चैन किसे कहते हैं हमने जाना तक नहीं।
मेरे लियेशायद वो दिन के तारे बन गये॥
कल तलक़ नेहां जो दिल में थे अरमानोंके मज़मूँ।
वो ख़ूबिये क़िस्मत से आज नक़्क़ारे बन गये॥
जिस नख़्ले तमन्ना को मैंने था अश्कों से सींचा।
निर्मूल उसे भी करने को वो आरे बन गये॥
तल्वारे अब्रू खैंचके दिल में "शायक़"जो रक्खा।
पर हाय! ग़ज़ब वो भी हैं तेग़ दो धारे बन गये॥

———

गाना—

हाले मौजूदः है दिलचस्प जब ज़माने में।
तो देर क्या है वो फस्ले बहार आने में॥
हिन्द माता को जो बालक हैं कृष्ण से गांधी।
बेड़ियां मां कि कटायेंगे जे़लखा़ने में॥
ख्वा़बे ग़फ़लत से उठ रहे हैं बाग़बाने चमन।
नज़र गड़ा न तू सइयाद आशियाने में॥
नाज़ करता है अबस खु़द पै तू ऐ लाले चमन।
कम हेना तुझसे पड़ेगी न रंग लाने में॥
मरने वाले जो हैं भारत के लिये सर देकर।
उनकी ताज़ीम को अशआर हैं इस गाने में॥
रगे गुलों से जो पर बाँध रखा है गुलचीं।
टूट जायेगा बुलबुलों के फड़फड़ाने में॥
मचा है गुल के शहीदों के कारनामों को।
हुरूफेज़र से लिखे जायेंगे फिसाने में॥
तुम शमा बन के जलाते हो तो है क्या परवाह।
देख तो लोगे के हिम्मत है क्या परवाने में॥
सर कटाने कि तमन्ना है अजब ऐ "शायक़"
देवीयाँ हिन्द की बैठेंगी न काशाने में॥

❋ गुलाब में कांटा ❋

॥ सचित्र सामाजिक नाटक ॥

ले०—ड्रामेटिस्ट-गौरीशङ्कर प्रसाद, "शायक" साहित्यालङ्कार, काशी।

यह एक सर्वोत्कृत षिक्षाप्रद नाटक शीघ्रही प्रकाशित होकर पाठकगणों की सेवा में आने वाला है। इसी नाटक के लिये अनेक सार्टिफ़िकेटस ड्रामेटिस्टों तथा मान्य सज्जनो से प्राप्त हुये हैं। इसमें हृदय फड़काने वाली भाषा का लालित्य तथा रुचिकर भाव इतना मन मुग्ध करहै कि जो एकबार इसे पढ़नेबैठना है वह बिना आद्योपान्त पढ़े उठता नही। समाज में घुसे हुये दुर्गुणों तथा उनके पोलों को लेखक ने इस खूबी से पाठकगणों के सामने दर्शाया है जिससे लेखक के लेखन कौशल तथा लेख प्रणाली पर मुंह से वाह! वाह!! की प्रशंशा निकले बिना नहीं रहसकती। इसमें बारांगना तथा विश्वासघाती मित्रोंके चंगुल में फंसकर अधम पतिका अपनी पति-सेवा-परायण प्राण से भी प्यारी पत्नी का अनादर करना तथा उसके ऊपर अत्याचार करना ऐसा हृदय द्रावक और दुःखोत्पादक दिखाया गया है कि लोग पढ़ते समय व्याकुल हो उठते हैं। हास्यरस तथा वीर रस की भी इसमें कमी नहीं है। विदूषक का पार्ट पढ़कर हंसते २ २ लोग लोट पोट होजाते हैं। अन्तमें सत्यमेव विजयते नानृतम् को चरितार्थ कर दिखाया है। इसमें गृह लक्ष्मियों तथा वारांगना और वारुणी देवी के अनन्य उपासकों को अपूर्व शिक्षा प्राप्त होती है। सारांश यह कि लेखक ने इस नाटक को केवल काल्पनिक ही नहीं बरन सजीवता का रूप दे डाला है।

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक मिलने का पता:—

"पञ्चानन प्रेस" सुखसागर काशी,